1

Lecture No.-01

Name of the college - A.P.S.M. College Barauni Begusarai
L.N.M.U Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)

Deptt - A.I.H. &C

Lession / plan - B.A. Part III A.I.H. &C Paper V

Topic - Silver Coins as Gupta Empire.

Date - 11-06-2021

गुप्त साम्राज्य के चाँदी के सिक्के

गुप्तकालीन चाँदी के सिक्के (रजत मुद्रायें), समुद्रगुप्त ने रजत सिक्कों का प्रचलन नहीं किया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सर्वप्रथम रजत सिक्कों का प्रचलन किया। संभवतः उसने मालवा गुजरात तथा काठियावाड़ के प्रदेशों को जीत लेने के पश्चात् वहाँ पर प्रचलित क्षत्रप सिक्कों के अनुकरण पर इस सिक्कों को प्रचलित किया। चन्द्रगुप्त के चाँदी के सिक्के प्रधान रूप से पश्चिम भारत में ही मिलते हैं, एक सिक्का बिहार को सुल्तान नामक स्थान पर मिला था। जो रूद्रसेन की चाँदी के सिक्कों के साथ मिला था अनुमान किया जाता है कि ये सिक्के कोई सैनिक अपने साथ पश्चिमी भारत से लाया था। यद्यपि इन सिक्कों में, पश्चिमी भारत में प्रचलित क्षत्रप सिक्कों का स्पष्ट प्रभाव दिखता है, तथापि सिक्कों में बहुत सी नवीनताएँ भी झलकती हुई प्रदर्शित होती है। उसने शक सिक्कों के मेरु पर्वत के स्थान पर गरुड़ अंकित किया। शक संवत् के स्थान पर गुप्त संवत् का प्रयोग किया गया। इन सिक्कों की तौल 26.8 ग्रेन से 31 ग्रेन तक है। मुखभाग पर क्षत्रप शैली दर्शनीय है। डॉ अल्टेकर ने इन सिक्कों को दो भागों में विभक्त किया है। पहले वर्ग के सिक्के इसके P.T.O.

धार्मिक सम्प्रदाय के द्योतक है, तथा दूसरे वर्ग के सिक्के उसके राजकुल का नामोल्लेख करते है।
इन सिक्को के अग्रभाग में राजा का अर्द्धशरीर अंकित है जो कि पूर्णतः क्षत्रपानुकरण प्रतीत होता है। गर्दन पर लम्बे बाल है। पृष्ठ भाग में पंख फैलाये गरुड़ की आकृति अंकित है।
उपाख्यान दो प्रकार के है —

(1) "परम भागवत महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य" (यह लेख लगभग अवश्वारोही प्रकार के सिक्को पर के लेख के समान है।
(2) श्रीगुप्त कुलस्य महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य"

कुमार गुप्त प्रथम की रजत मुद्राऐं — द्वितीय चन्द्रगुप्त की अपेक्षा कुमारगुप्त ने अधिक संख्या में इन सिक्को को प्रचलित करवाया था। जिनके कई वर्ग तथा उप-प्रकार दिखाई पड़ते है। ये सिक्के पश्चिमी भारत तथा गंगाघाटी में बहुलता से प्रचलित थे जबकि द्वितीय चन्द्रगुप्त के सिक्के केवल पश्चिमी भारत में ही सीमित रह गये थे।

(1) पश्चिमी भारतीय रजत मुद्रा — ये सिक्के काठियावाड़, गुजरात, वल्लभी, मोर्वी, जूनागढ़, अहमदाबाद, कैरा आदि स्थानो से उपलब्ध हुए है। इस प्रकार के सिक्के सतारा जिले के समन्द निधि से तथा बरार के इलिचपुर से प्राप्त हुए है। संभवतः ये सिक्के उसके सैनानायकों विद्वान ब्राह्मणों या वणिकों द्वारा वहाँ लाये गये थे। सिक्को की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि क्षत्रप सिक्को के अनुकरण पर बनने के बावजूद स्तूप या अर्द्धचन्द्र युक्त पहाड़ किसी सिक्के पर नही है, जबकि यह समान सिक्को पर आमतौर से पाया जाता है।